"छुटकारा नहीं-बिन सतिगुरू"

• बहु भेख करि भरमाईऐ मनि हिरदै कपट कमाई । हरि का महल न पावई मरि विसटा माहि समाई ।1।

अर्थः- बहुत सारे धार्मिक पहरावे पहन के दूसरों को ठगने के लिए अपने मन में दिल में खोट कमा के मनुष्य खुद ही भटकन में उलझ के रह जाता है । जो मनुष्य ये दिखावा ठगी करता है वह परमात्मा की हजूरी प्राप्त नहीं कर सकता । बल्कि वह आत्मिक मौत मर कर ठगी आदि विकारों के गंद में फसा रहता है ।

मन रे ग्रिह ही माहि उदास । सच संजम करणी सो करे गुरमुखि होई प्रगास ।1। रहाउ ।

अर्थः- हे मेरे मन ! गृहस्थ में रहते हुए ही माया के मोह से निर्लिप रह । पर जिस मनुष्य के हृदय में गुरु की शरण पड़ के समझ पैदा होती है, वह मनुष्य ही सदा स्थिर प्रभु नाम नाम जपने की कमाई करता है और विकारों से संकोच करता है इस वास्ते, हे मन ! गुरु की शरण पड़ के ये करने योग्य कामों को करने का ढंग सीखो ।

गुर के सबदि मन जीतिआ गति मुकति घरै महि पाई । हरि का नाम धिआईऐ सतसंगति मेलि मिलाइ ।2।

अर्थः- जिस मनुष्य ने गुरु के शब्द में जुड़ के अपने मन को वस में कर लिया है, वह गृहस्थ में रहते हुए भी ऊँची आत्मिक अवस्था प्राप्त कर लेता है, विकारों से खलासी पा लेता है । इस वास्ते हे मन ! साध - संगत के एकत्र में मिल के परमात्मा के नाम का स्मरण करना चाहिए ।

जे लख इसतरीआ भोग करहि नव खंड राज कमाहि । बिन सतगुर सुख न पावई फिरि फिरि जोनी पाहि ।3।

अर्थः- हे भाई ! अगर तू काम - वासना पूरी करने के लिए लाखों स्त्रीयां भी भोग ले, अगर तू सारी धरती का राज भी कर ले, तो भी सत्गुरू की शरण के बिना आत्मिक सुख नहीं मिल सकेगा, बल्कि बारम्बार योनियों में पड़ा रहेगा ।

हरि हार कंठ जिनी पहिरीआ गुर चरणी चित लाई । तिना पिछै रिधि सिधि फिरै ओना तिल न तमाई ।4।

अर्थः- जिन लोगों ने गुरु के चरणों में मन जोड़ के परमात्मा के नाम स्मरण का हार अपने गले में पहन लिया है, करामाती ताकतें उनके पीछे - पीछे चलतीं हैं, पर उन्हें उसका रत्ती मात्र भी लालच नहीं होता ।

जिस ही की सिरकार है तिस ही का सभ कोई । गुरमुखि कार कमावणी सच घटि परगट होई ।

अर्थः- जिस देश में जिस बादशाह की हकूमत हो उस देश का हरेक जीव उसी बादशाह का हो के रहता है इसी तरह अगर गुरु के सन्मुख हो के कर्म किया जाए तो सदा स्थिर रहने रहने वाला प्रभु हृदय में प्रगट हो जाता है ।

अंतरि जिस कै सच वसै सचे सची सोई । सचि मिले से न विछुड़हि तिन निज घरि वासा होई ।1।

अर्थः- और गुरु के सन्मुख हो के जिस मनुष्य के हृदय में सदा स्थिर रहने वाला प्रभु प्रगट हो जाए वह सदा स्थिर प्रभु का रूप हो जाता है, और सदा स्थिर शोभा पाता है । जो लोग सदा स्थिर प्रभु से जुड़े रहते हैं, वह उससे दुबारा कभी विछड़ते नहीं, उनका निवास सदा अपने अंतरात्मे में रहता है ।

मेरे राम मै हरि बिन अवर न कोई । सतिगुर सच प्रभ निरमला सबदि मिलावा होई ।1। रहाउ।

अर्थः- हे मेरे राम ! प्रभु के बिना मेरा और कोई आसरा नहीं है । हे भाई ! उस प्रभु के साथ मिलाप उस गुरु के शब्द में जुड़ने से ही हो सकता है जो पवित्र स्वरूप है और जो सदा स्थिर प्रभु का रूप है ।

सबदि मिले सो मिलि रहै जिस नउ आपे लए मिलाइ । दूजै भाइ को ना मिलै फिरि फिरि आवै जाई ।

अर्थः- जो मनुष्य गुरु के शब्द में जुड़ता है, वह प्रभु चरणों में जुड़ा रहता है पर वही मनुष्य मिलता है जिसे परमात्मा खुद ही अपने चरणों में मिलाता है । प्रभु को विसार के किसी और माया आदि के प्यार में रहने से कोई भी परमात्मा को नहीं मिल सकता ।

सभ महि इक वरतदा एको रहिआ समाई । जिस नउ आपि दइआल होई सो गुरमुखि नामि समाई ।2।

अर्थः- वह तो बार - बार पैदा होता और मरता रहता है । यद्यपि सभी जीवों में परमात्मा ही बसता है, और हर जगह परमात्मा ही मौजूद है, फिर भी वही मनुष्य गुरु के सन्मुख हो के उस के नाम में लीन होता है जिसके ऊपर प्रभु खुद दयावान हो ।

पड़ि पड़ि पंडित जोतकी वाद करहि बीचार । मति बुधि भवी न बुझई अंतरि लोभ विकार ।

अर्थः- पंडित और ज्योतिषी लोग शास्त्र पढ़ - पढ़ के सिर्फ बहसें ही विचार करते हैं, इस तरह उनकी मति उनकी अक्ल कुराहे पड़ जाती है, वह जीवन के सही रास्ते को नहीं समझते । उनके अंदर लोभ - विकार प्रबल होता है ।

लख चउरासीह भरमदे भ्रमि भ्रमि होई खुआर । पूरबि लिखिआ कमावणा कोई न मेटणहार ।3।

अर्थः- वह माया के पीछे भटक - भटक के लोभ लहर में खुआर हो - हो के चौरासी लाख जोनियों के चक्कर में भटकते रहते हैं । पर उनके भी क्या वस पूर्वले जीवन में किये करमों से अंकुरित संस्कारों के अनुसार ही कमाई करनी है कोई अपने उद्यम से उन संस्कारों को मिटा नहीं सकता ।

सतिगुर की सेवा गाखड़ी सिर दीजै आप गवाई । सबदि मिलहि ता हरि मिलै सेवा पवै सभ थाई ।

अर्थः- ये संस्कार मिटते हैं गुरु की शरण पड़ने से, पर गुरु की बताई सेवा बहुत कठिन है, स्वै - भाव गवा के सिर देना पड़ता है । जब

कोई जीव गुरु के शब्द में जुड़ते हैं, तो उनको परमात्मा मिल जाता है, उनकी सेवा स्वीकार हो जाती है ।

पारसि परसिऐ पारस होई जोती जोति समाई । जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सतगुरु मिलिआ आई ।4।

अर्थः- गुरु पारस को मिलने से पारस ही हो जाते हैं । गुरु की सहायता से परमात्मा की ज्योति में मनुष्य की ज्योति मिल जाती है । पर, गुरु भी उनको ही मिलता है, जिनके भाग्य में धुर से ही बख्शिश के लेख लिखे हों ।

मन भुखा भुखा मत करहि मत तू करहि पूकार । लख चउरासीह जिन सिरी सभसै देई अधार ।

अर्थः- हे मेरे मन ! हर वक्त तृष्णा के अधीन ना टिका रह, और गिले - शिकवे ना करता रह । जिस परमात्मा ने चौरासी लाख जूनें पैदा की हैं, वह हरेक जीव को रोजी का आसरा भी देता है ।

निरभउ सदा दइआल है सभना करदा सार । नानक गुरमुखि बुझीऐ पाईऐ मोख दुआर ।5। (3-26-27)

अर्थः- वह प्रभु जिसे किसी का डर नहीं और जो दया का स्रोत है सभ जीवों की संभाल करता है । हे नानक ! गुरु की शरण पड़ने पर ये समझ आती है, और माया के बंधनों से खलासी का राह मिलता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"